शताब्दी समारोह, हरिद्वार
वसुधा वंदन कार्यक्रम से हुआ औपचारिक शुभारंभ
2

उत्तर प्रदेश और झारखण्ड प्रवास
शताब्दी वर्ष के सौभाग्य और दायित्व की याद दिलाई
7

श्रद्धेया शैल जीजी के जन्मदिन पर अंतस् के उल्लास की भावभरी अभिव्यक्तियाँ
8

शताब्दी वर्ष-2026

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 दिसम्बर 2025

वर्ष : 38, अंक : 12
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 नवम्बर 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-16

राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे।
जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।

अगली शताब्दी की संभावनाएँ अद्भुत, अनुपम और अभूतपूर्व हैं। इन दिनों दुनिया में दलदल में फँस जाने जैसी स्थिति अवश्य है, पर ऐसा नहीं हो सकता कि मनुष्य समय रहते न चेते, असहाय बनकर अपना सर्वनाश ही देखता रहे।

बिखराव और विषमता इस समय के दो बड़े संकट हैं, जो असंख्यों प्रकार के संकटों को जन्म देते हैं। नवयुग में एकता और समता के दोनों सिद्धांत हर व्यक्ति को इच्छा या अनिच्छा से अंगीकार करने ही पड़ेंगे, ऐसा मनीषियों, भविष्यद्रष्टाओं का अभिमत है और महाकाल का निर्धारण है। महाकाल के इस निर्धारण एवं अनुशासन के सामने कोई उद्दंडता अवरोध बनेगी, इसकी आशंका न की जाए तो ही ठीक है। ये अवरोध नवयुग के प्रवाह में पत्तों की तरह लहरों पर उछलते-कूदते कहीं से कहीं जा पहुँचेंगे। चक्रवात से टकराने की मूर्खता करने वाले तिनके उस वायु भँवर में फँस कर अपना अस्तित्व तक गँवा बैठते हैं।

एकता अब अपरिहार्य होकर रहेगी। जाति-पाँति के नाम पर रंग, वर्ण और लिंग के आधार पर अलग-अलग कबीले बसा कर रहना आदिम काल में ही संभव था, आज के औचित्य को समर्थन देने वाले युग में नहीं। संसार भर में एक ही जाति का अस्तित्व रहेगा और वह है सुसंस्कृत, सभ्य मनुष्य जाति। काले, पीले, सफेद, गेहुँआ आदि रंगों की चमड़ी होने से किसी को भी अपनी अलग बिरादरी बनाए रह सकना अब संभव न होगा।

धर्म-संप्रदायों के नाम पर भाषा, जाति प्रथा, क्षेत्र आदि के नाम पर जो कृत्रिम विभेद की दीवारें बन गई हैं, वे लहरों की तरह अपना-अपना अलग प्रदर्शन भले ही करती रहें, पर वे सभी एक ही जलाशय की सामयिक हलचल भर मानी जाएँगी। मनुष्य को अलगाव और बिखराव में बाँधने वाले प्रचलन इन दिनों पुरातन, शास्त्र-सम्मत अथवा संकीर्णता पर आधारित होने के कारण कितने ही प्रबल प्रतीत क्यों न होते हों, पर अगले तूफान में इन बालुई घर-घरोंदों में से एक का भी पता न चलेगा।

भगवान ने धरती को अपने सभी पुत्रों के लिए समान सुविधा देने के लिए सृजा है। प्राकृतिक संपदा पर सभी का समान हक है। धरातल एक देश बन कर रहेगा। देशों की कृत्रिम दीवारें खींचकर उसके टुकड़े बने रहना न तो व्यावहारिक रहेगा, न सुविधाजनक। इनके रहते देश भक्ति के नाम पर युद्ध छिड़ते रहेंगे और समर्थ दुर्बलों को पीसते रहेंगे। कुछ देश अनुचित अधिकार को अपनी पिटारी में बंद कर शेष को दाने-दाने के लिए तरसायें, यह विभाजन अन्यायपूर्ण होने के कारण देर तक टिकेगा नहीं।

सारा विश्व एक देश होगा और एक पिता की संतान होने के नाते उस पर रहने वाले सभी मनुष्य ईश्वर द्वारा प्रदत्त सभी साधनों का उपयोग कर सकेंगे। परिश्रम और कौशल के आधार पर किसी को कुछ अधिक मिले, यह दूसरी बात है, पर पैतृक संपदा पर तो सभी संतानों का समान अधिकार होना ही चाहिए।

धर्म-संप्रदायों की विभाजन रेखा ऐसी है, जो अपने बुद्धि-वैभव से शास्त्रार्थों, टकरावों के आ पड़ने पर अपनी मान्यताओं को सच और दूसरों के प्रतिपादनों को झूठा सिद्ध करने में उभरती रही है। इसका इसी प्रकार परिपोषण और प्रचलन होता रहा तो विवाद, विनाश और विषाद घटेंगे नहीं, बढ़ते ही रहेंगे। इसलिए अनेकता में एकता खोज निकालने वाली दूरदर्शिता को संप्रदायवाद के क्षेत्र में भी प्रवेश करना चाहिए। ..... (शेष पृष्ठ 2 पर)

तलाश है प्राणवान जाग्रत् देवात्माओं की

महत्ता मौलिक गुणों की

नवयुग का सृजन एक बड़ा काम है। उसके लिए अंगद, हनुमान, नल, नील जैसे वानरों और जामवंत जैसे रीछों की आवश्यकता है। गौ चराने, गेंद खेलने और गोवर्धन उठाने में लाठी का सहयोग देने के लिए तो ग्वाल-बाल भी अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सके, किन्तु महाभारत जीतने में भीम, अर्जुन से ही काम चला। ऐसे महान परिवर्तनों का सूत्र संचालन महामानव ही करते रहे हैं।

मौलिक विशिष्टता का अपना महत्त्व है। तेल तिल में से निकलता है। कच्चा माल सही न हो तो कारखाने बढ़िया चीज कैसे बनायें? बालू से कोई कुम्हार टिकाऊ बर्तन नहीं बना सकता। कच्चे लोहे की तलवार से मोर्चा जीतना बलिष्ठ योद्धा के लिए भी सम्भव नहीं होता। युग परिवर्तन की इस ऐतिहासिक बेला में ऐसी देवात्माओं की विशिष्ट आवश्यकता अनुभव की जा रही है, जिनमें मौलिक प्रतिभा विद्यमान है। इसके लिए विशेष रूप से खोज-बीन करने की आवश्यकता पड़ेगी।

प्रशिक्षण, वातावरण एवं सम्पर्क का प्रभाव तो पड़ता है, पर महामानव इतने से ही नहीं बन जाते। उनके लिए संस्कारगत मौलिकता एवं संचित प्रखरता की भी आवश्यकता होती है। लोहे की मजबूती उसकी संरचना में ही सन्निहित है। कारखानों में ढालने, खरादने का काम होता है, किन्तु कृत्रिम लोहा नहीं बन सकता और न उसका स्थानापन्न किसी अन्य धातु को बनाया जा सकता है। खिलौने बालु के नहीं, चिकनी मिट्टी के बनते हैं। हथौड़े की चोट जंग लगे लोहे नहीं, फौलादी इस्पात ही सह पाते हैं। प्रखर व्यक्तित्वों का कुशल नेतृत्व ही उफनती नदी में नाव खेता और तूफानों से टकराते हुए जहाज को किनारे लगाता है।

वर्तमान युग की चुनौतियाँ

युग सृजन के अनेक महत्त्वपूर्ण कामों में सबसे प्रमुख है-उस प्रयोजन को पूरा कर सकने में समर्थ प्रतिभाओं को ढूँढ़ निकालना और उन्हें प्रशिक्षित, परिपक्व करना। एक जैसी शक्ल सूरत और समान परिस्थिति वाले व्यक्तियों के मध्य भी कई बार स्तर की दृष्टि से जमीन-आसमान जैसा अन्तर पाया जाता है। यह अंतर उनकी उस आन्तरिक संरचना का होता है, जो जन्म-जन्मान्तरों के संचित संस्कारों से बनती है। यह सम्पदा किसके पास है यह जाँचना, जन-जन की तलाशी लेने के समान

है। लोग भीतर कुछ होते हैं और बाहर कुछ बनते रहते हैं। दंभ बहुत और तथ्य कम वाले बहरूपियों, अभिनेताओं और बाजीगरों से जन समाज भरा पड़ा है। इनकी गहराई में कैसे उतरा जाए? खारी जल राशि से भरे समुद्र में गहरी डुबकी मार कर मोतियों को किस तली-तलहटी में ढूँढ़ा जाए? उन क्षेत्रों में पाये जाने वाले मगरमच्छों से बचने और जूझने की कुशलता के बिना कोई गोताखोर सफल नहीं हो सकता। युग सृजन के प्रयासों में भी ऐसी ही तैयारी करनी पड़ रही है।

युग परिवर्तन सृष्टि के इतिहास में अभूतपूर्व अवसर है। इन विषम परिस्थितियों में बहुमुखी समस्याओं की जड़ें लोकमानस में गहरी घुसी हुई होने के कारण युग परिवर्तन अतीव कठिन है। यह समुद्र के खारे जल को हिमालय की सम्पदा बना देने जितना कठिन है, उसे हर कोई नहीं समझ सकता।

जाग्रत् आत्माओं के उत्तरदायित्व

युगसंधि में जाग्रत् आत्माओं को दोहरे उत्तरदायित्व सँभालने पड़ते हैं - विनाशकारी परिस्थितियों से जूझना और विकास के सृजन प्रयोजनों को सींचना। किसान और माली को भी यही करना पड़ता है। खर पतवार उखाड़ना-बेतुकी डालियों को काटना, पशु-पक्षियों से फसल को बचाना जैसी प्रतिरोध सुरक्षा की जागरूकता दिखाने पर ही किसान के पल्ले कुछ पड़ेगा, अन्यथा परिश्रम निरर्थक चले जाने की आशंका बनी रहेगी। उन्हें एक मोर्चा सृजन का भी संभालना पड़ता है। बीज-बोना, खाद देना, सिंचाई का प्रबंध करना रचनात्मक काम है। इसकी उपेक्षा की जाये तो उत्पादन की आशा समाप्त होकर ही रहेगी। युग संधि में जागृत आत्माओं को भी यही करना पड़ता है।

आवश्यक नहीं कि हर व्यक्ति को समाज की संरचना के लिए आन्दोलन परक कार्य ही करना पड़ें। युद्ध जीतने में सभी को तलवार नहीं चलानी पड़ती। वे लोग भी द्वितीय पंक्ति के सैनिक ही हैं, जो युद्ध सामग्री बनाते अथवा सैनिकों पर पड़ने वाले खर्च को अपने परिश्रम से जुटाते हैं।

इसी प्रकार सृजन प्रयोजन के असंख्यों पक्ष हैं। उनमें से जो जिसे कर सके, वह उसे सँभाले। कला, साहित्य, विज्ञान, उत्पादन, व्यवसाय, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे अनेक क्षेत्र ऐसे हैं, जिनमें बिना अधिक जनसम्पर्क साधे भी अभीष्ट प्रयोजनों में निरत रहा जा सकता है और आन्दोलनकारियों से भी अधिक महत्त्व का ऐसा कार्य किया जा सकता है, जो नवयुग की आवश्यकता पूरा करने में अपने ढंग से असाधारण योगदान कर सकें।

नव-निर्माण में असंख्य दिशा धाराएँ हैं, विकृतियों से जूझने के लिए असंख्य मोर्चे हैं, पाटने के लिए अनेक खाई, खन्दक हैं और अनेकों पुल बाँधे जाने हैं। इनके लिए जितनी साधन सामग्री चाहिए, उससे अनेक गुनी आवश्यकता उन हस्तियों की है, जो मौलिक विशेषताओं से संचित सम्पदाओं की दृष्टि से सक्षम एवं समर्थ कही जा सकें। उथले लोग तो गुब्बारे की तरह फूलते और बुलबुले की तरह फूटते रहते हैं।

प्रतिभाओं की खोज

अपने समय में एक बहुत बड़ा काम युग मानवों को खोज निकालना है। युग सृजन के लिए सम्पदा, प्रतिभा, शिक्षा, श्रमशीलता जैसी विभूतियाँ प्रचुर परिमाण में चाहिए ही, पर उससे भी अधिक आवश्यकता उन देवात्माओं की है, जिनमें आन्तरिक वर्चस विपुल परिमाण में भरा पड़ा हो। बड़े काम के लिए बड़ी हस्तियाँ ही चाहिए। ईसा-अरस्तू और सुकरात, लिंकन और वॉशिंगटन, विवेकानन्द और गोविन्द सिंह, नानक और कबीर, शतरूपा, कौशल्या, सीता, सावित्री, मदालसा, शकुन्तला, अरविन्द और रमण, रामकृष्ण परमहंस और विरजानन्द जैसी हस्तियाँ ही युग निर्माण जैसे महान प्रयोजन को पूरा करने में अग्रिम भूमिका निभा सकती हैं। काम बड़ा है, तो उसके अनुरूप व्यक्तित्व भी चाहिए।

वर्चस ही आत्मबल है। ओजस्वी, मनस्वी, तेजस्वी व्यक्ति वही होते हैं, जिनमें इस आंतरिक वैभव की, दैवी अनुदान की समुचित मात्रा विद्यमान हो। इस खोज को इन दिनों सबसे अधिक महत्त्व दिया जाना है।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
अखण्ड ज्योति, फरवरी 1980, पृष्ठ 44-49
से संकलित, सम्पादित अंश

ऋषि पुत्रों के श्रम और मनोयोग से पुष्पित-फलित हो रही है ऋषियुग्म की तप साधना

वसुधा वंदन (तीर्थ रज पूजन) के कार्यक्रम के साथ जन्मशताब्दी समारोह का औपचारिक शुभारंभ हुआ

दिनांक 4 दिसम्बर 2025 को बैरागी द्वीप, हरिद्वार में शान्तिकुञ्ज द्वारा आयोजित 'वसुधा वंदन (तीर्थ रज पूजन) के कार्यक्रम के साथ शताब्दी समारोह-2026 का औपचारिक शुभारंभ हो गया। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया जीजी के मार्गदर्शन-आशीर्वाद से जन्मशताब्दी समारोह का नेतृत्व कर रहे अखिल विश्व गायत्री परिवार के आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस कार्यक्रम को आगामी दिनों में युगसृजेता-युग सैनिकों, विश्वव्यापी शक्तिपीठ-जनजागृति केन्द्रों तथा भावी योजना एवं कार्यक्रमों की दिशाधारा निर्धारित करने वाला ऐतिहासिक समारोह बताया। यद्यपि आयोजन स्थल पर 10 नवम्बर से ही हजारों की संख्या में पहुँच रहे शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ताओं, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक एवं विद्यार्थियों तथा शान्तिकुञ्ज के विविध शिविरों में पधारे साधकों ने आयोजन स्थल पर श्रमदान आरंभ कर दिया था। राम के रीछ-वानरों की तरह वे अपने श्रम और मनोयोग के साथ झाड़-झंखाड़ से भरे ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र को समतल, सुन्दर बनाने में जुट गए थे।

सम्पादकीय

वसुधा वंदन समारोह के मंच पर उपस्थित (बायें से) विधायक श्री मदन कौशिक जी, भाजपा के संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री श्री शिव प्रकाश जी, डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, माननीय राज्यपाल ले.ज. (से.नि.) गुरमीत सिंह जी, जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी राजराजेश्वराश्रम जी, शिक्षाविद श्री आदित्य कोठारी जी और उ.प्र. के माननीय परिवहन मंत्री श्री दयाशंकर सिंह जी

51 तीर्थों की पवित्र रज की स्थापना

वसुधा वंदन समारोह में 51 प्रमुख तीर्थों (मुख्यतः उत्तराखण्ड के) की स्थापना कर पूजन-वंदन किया गया। इस समारोह में भाग लेने के लिए समस्त उत्तराखण्ड के अलावा पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, पंजाब आदि प्रांतों से हजारों की संख्या में नैष्ठिक कार्यकर्त्ता उपस्थित हुए।

वसुधा वंदन समारोह में 51 पवित्र तीर्थों से लाई गई रज का पूजन-वंदन करते माननीय राज्यपाल श्री गुरमीत सिंह, से.नि. ले. जनरल

अभिव्यक्तियाँ

ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का स्रोत है अखण्ड दीप

अखण्ड दीप परम पूज्य गुरुदेव की आध्यात्मिक ऊर्जा का केन्द्र है। यह ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का स्रोत है। यह शताब्दी पर्व भारत की अखण्डता के लिए समर्पित होने का स्मरण कराता है। आप अपने को, अपनी गहराई को पहचानिये और शांति, सेवा, समर्पण और कर्मयोग का संकल्प लेकर जाइये।

- माननीय राज्यपाल श्री गुरमीत सिंह जी

बलिदान की भावना पुनर्जीवित हो

गायत्री परिवार की दिव्य चेतना मथुरा, हिमालय, हरिद्वार होते हुए सारे विश्व में प्रवाहित हुई, उसका मैं दर्शक हूँ। इसमें माताजी की भूमिका का मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया है।

धर्म के लिए जीने-मरने की कसमें खाने वाला सनातनी आज सुख, सुविधा में लिप्त क्यों है? आज हर व्यक्ति में धर्म के उत्थान के लिए बलिदान की भावना को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।

- जगद्गुरु स्वामी राजराजेश्वराश्रम जी महाराज

यह गुरु-ऋण की अभिव्यक्ति का पर्व है

गुरु-मार्गदर्शक तो अनेकों मिल जाते हैं, भगवान हजारों वर्षों की प्रतीक्षा के बाद मिलते हैं। हम सबका सौभाग्य है कि हमें गुरुरूप में भगवान मिले हैं। गुरुदेव-माताजी ने जीवन भर बाँटा है, माँगा कुछ नहीं। यह शताब्दी वर्ष हमारे माता-पिता, अभिभावक, गुरु को देने का समय है, उनके ऋण की अभिव्यक्ति का पर्व है।

- डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

धर्म के उत्थान व सांस्कृतिक पुनर्जागरण की ज्योति

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रज्वलित ज्योति धर्म के उत्थान एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण की अखण्ड ज्योति है। इस कार्य में माताजी का जीवन हम सबके लिए अनुकरणीय रहा है।

- श्री शिव प्रकाश जी

कार्यक्रमों का प्रयोजन

यह शताब्दी समारोह है (1.) शक्तिस्वरूपा परम वंदनीया माताजी के अवतरण का, (2.) अखण्ड दीप के प्राकट्य का और (3.) परम पूज्य गुरुदेव द्वारा 24-24 लाख के 24 गायत्री महापुरश्चरणों की तप साधना के शुभारंभ का। यह शताब्दी वर्ष है युग परिवर्तन जैसे महान प्रयोजन के लिए दिव्य भागवत चेतना के अवतरण का। यह देश-विदेश में गायत्री परिवार की संगठनात्मक इकाइयों से जुड़े नैष्ठिक परिजनों एवं कार्यकर्त्ताओं का विचार मंथन परक सम्मेलन है। यह तीन प्रमुख प्रयोजनों के लिए समर्पित होगा-(1.) लोकसेवियों को दिशाबोध, (2.) शक्तिपीठों/प्रज्ञा केन्द्रों को जनजागरण केन्द्रों के रूप में विकसित करना और (3.) परम पूज्य गुरुदेव के विचारों और मिशन की गतिविधियों को जन-जन तक पहुँचाने की योजनाओं एवं कार्यक्रमों पर मंथन।

इस हेतु समारोह में भाग लेने के लिए आ रहे सभी परिजनों से **शान्तिकुञ्ज द्वारा निर्धारित प्रारूप में प्रज्ञा मण्डलों/शक्तिपीठों/जिला, जोन, उपजोन आदि समस्त संगठनात्मक इकाइयों से जानकारियाँ मँगाई जा रही हैं। यह प्रारूप शान्तिकुञ्ज में जोन कार्यालयों से प्राप्त किये जा सकते हैं।** इन जानकारियों के आधार पर शताब्दी समारोह में समूह चर्चाएँ एवं विचार गोष्ठियों का आयोजन किया जायेगा।

आयोजन स्थल संबंधी जानकारियाँ

तिथियाँ : शताब्दी समारोह अखण्ड दीप के प्राकट्य पर्व, परम पूज्य गुरुदेव का बोध दिवस बसंत पंचमी (23 जनवरी 2026) के परिप्रेक्ष्य में 19 से 24 जनवरी 2026 की तिथियों में हरिद्वार में आयोजित हो रहा है।

स्थान : यह हरिद्वार के कनखल क्षेत्र में गंगातट पर स्थित 'बैरागी द्वीप' में सम्पन्न होगा। यह 45,66,000 वर्ग फीट क्षेत्र (लगभग 300 एकड़ क्षेत्र) के विशाल भूभाग पर हो रहा है।

व्यवस्थाएँ :
- 50,000 परिजनों की आवासीय व्यवस्था बनाई जा रही है।
- 9 विशाल नगरों का निर्माण
- 1,60,000 वर्ग फीट के क्षेत्र में विचार मंच
- ऋषियुग्म के जीवन दर्शन पर विशाल प्रदर्शनी
- व्यसनमुक्ति, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी, पर्यावरण आदि आन्दोलनों पर विशेष प्रदर्शनियाँ
- विशाल युग साहित्य विक्रय केन्द्र
- दो भोजनालय

कार्यक्रम का स्वरूप

ज्योति कलशों की शोभायात्रा : देश-विदेश में शताब्दी वर्ष-2026 का संदेश एवं आमंत्रण देकर लौटी ज्योति कलश यात्राओं की शोभायात्रा निकाली जाएगी।

विचार गोष्ठियाँ : यह कार्यक्रम समूह चर्चा एवं विचार गोष्ठी प्रधान है, जिसमें मिशन की भावी सक्रियता एवं व्यवस्थाओं संबंधी निर्धारण होगा।

राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित विशिष्ट सम्मेलन : संत सम्मेलन, जनप्रतिनिधियों का सम्मेलन, वनवासी सम्मेलन जैसे विशेष प्रस्तावित कार्यक्रमों में राष्ट्र के कर्णधारों द्वारा विचार साझा किये जायेंगे। हैं। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी स्वयं इन सम्मेलनों को सम्बोधित करने का आमंत्रण देने के लिए विशिष्ट महानुभावों तक पहुँच रहे हैं।

मुख्यमंत्री श्री धामी जी व मान. श्रीमती निर्मला सीतारमन जी

मान. श्री शिवराज सिंह जी व मान. डॉ. जितेन्द्र सिंह जी

विशेष सावधानी रखें

पर्यटन के लिए न आयें :
शताब्दी समारोह विचार मंथन प्रधान है। अतः केवल विविध संगठन, सृजनात्मक गतिविधियों और सेवा कार्यों से जुड़े कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को ही इस सम्मेलन में आमंत्रित किया गया है। कृपया पर्यटन की दृष्टि से कोई भी परिजन न आयें।

सर्दी का विशेष ध्यान रखें :
- शताब्दी समारोह मकर संक्रांति के बाद हो रहा है। हरिद्वार में इन दिनों कड़ाके की ठंड होती है। आयोजन स्थल गंगातट पर है। ठंडी हवाएँ चलती हैं। आने वाले परिजनों की टेंटों में सामूहिक रूप से ठहरने की व्यवस्था होगी। अतः आने वाले सभी परिजनों से निवेदन है कि इन परिस्थितियों के अनुरूप अपने पहनने के गर्म कपड़े और ओढ़ने-बिछाने के साधन साथ लेकर आयें।
- बीमार, अक्षम और वृद्ध लोग इस कार्यक्रम में न आयें।
- छोटे बच्चों को अपने साथ लेकर न आयें।
- आकस्मिक आवश्यकताओं के लिए चिकित्सा सुविधाएँ यहाँ उपलब्ध होंगी, लेकिन अपने जरूरत की दवाइयाँ अपने साथ लाना न भूलें।

कार्यक्रम स्थल पर चल रही है गायत्री महामंत्र की सामूहिक जप साधना

प्रथम दीप प्रज्वलन के लिए पहुँचीं श्रद्धेया शैल जीजी तथा श्रद्धेय डॉक्टर साहब-जीजी द्वारा शक्ति कलश पूजन एवं आयोजन स्थल पर साधना कक्ष में जप करती बहिनें

युग निर्माण सत्संकल्प-16

(..... पृष्ठ 1 से आगे)

अंततः विश्व मानव का एक ही धर्म 'मानव धर्म' होगा। उसके सिद्धांत चिंतन, चरित्र और व्यवहार के साथ जुड़ने वाली आदर्शवादिता पर अवलंबित होंगे। यह बात आज भले ही सघन तमिस्रा में कठिन मालूम पड़ती हो, पर वह समय दूर नहीं जब एकता का सूर्य उगेगा और इस समय जो अदृश्य है, असंभव प्रतीत होता है, वह उस वेला में प्रत्यक्ष एवं प्रकाशवान होकर रहेगा।

नशामुक्त भारत अभियान की 5वीं वर्षगाँठ पर हुए कार्यक्रम

करोड़ों युवाओं एवं विद्यार्थियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया है

प्रशासन ने किया गायत्री परिवार का सम्मान

भोपाल। मध्य प्रदेश : सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर संचालित 'नशामुक्त भारत अभियान' की पाँचवीं वर्षगाँठ पर मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में अखिल विश्व गायत्री परिवार के व्यसन-मुक्ति के निःस्वार्थ सेवा भाव एवं समर्पण को सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि, मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री श्री नारायण कुशवाह ने व्यसनमुक्ति के क्षेत्र में लंबे समय से कार्य कर रही सामाजिक संस्थाओं के योगदान का उल्लेख करते हुए गायत्री परिवार को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

इस कार्यक्रम के साथ केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार जी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े। कार्यक्रम में गायत्री परिवार से डॉ. दयानंद, प्रताप सिंह राणा, आर.पी. गुप्ता, पटेल जी, पंकेश, शिवदयाल, शांति दीदी, राय दीदी एवं मीडिया प्रभारी अभिषेक परमार ने विशेष रूप से सहभागिता की।

कार्यक्रम का समापन एक स्वस्थ, जागरूक और सशक्त भारत के निर्माण हेतु व्यसनमुक्त समाज बनाने के राष्ट्रव्यापी संकल्प के साथ हुआ।

मंत्री महोदय से सम्मान ग्रहण करते गायत्री परिवार के प्रतिनिधि श्री रमेश नागर

परम पूज्य गुरुदेव ने बनाया जनआन्दोलन

गायत्री परिवार की ओर से श्री रमेश नागर ने यह सम्मान ग्रहण किया। उन्होंने बताया कि परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने व्यसन को आत्मिक एवं सामाजिक प्रगति के लिए बहुत बड़ा अभिशाप माना है और यज्ञ, संस्कारों में नशामुक्त जीवन के संकल्प की देवदक्षिणा के रूप में नशामुक्ति को एक अत्यंत प्रभावशाली सामाजिक आंदोलन बनाया है। गायत्री परिवार अपने राष्ट्रव्यापी नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत करोड़ों विद्यार्थियों एवं युवाओं को सही दिशा दे रहा है।

'दिया' छत्तीसगढ़ ने अपनी सक्रियता का परिचय दिया

दुर्ग। छत्तीसगढ़ : भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, नई दिल्ली के निर्देशानुसार 'नशामुक्त भारत अभियान' की 5वीं वर्षगांठ के अवसर पर 18 नवंबर 2025 को जिलेभर में व्यापक स्तर पर जागरूकता एवं शपथ कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसी क्रम में समाज कल्याण विभाग, दुर्ग द्वारा स्व. सेठ रतनचंद सुराना कॉलेज के सहयोग से कॉलेज परिसर हॉल में नशा मुक्ति शपथ कार्यक्रम आयोजित किया गया। महापौर श्रीमती अल्का बाघमार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। अनेक अधिकारियों, समाजसेवी संगठनों गणमान्यों के साथ इस कार्यक्रम में गायत्री परिवार के संयोजक डॉ. पी.एल. साव एवं योगेन्द्र कुमार ने भी भाग लिया। उन्होंने युवा संगठन 'दिया' द्वारा शिक्षण संस्थानों में बच्चों को नशामुक्ति की प्रेरणा देने के लिए गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी तथा इस अभियान को निरंतर गतिशील रखने का संकल्प लिया।

समाज कल्याण विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'दिया' छत्तीसगढ़ के प्रतिनिधि डॉ. पी.एल. साव व अन्य

मृत्यु भोज के स्थान पर पर्यावरण संरक्षण एवं गौसेवा

बैतूल। मध्य प्रदेश

एक अनुकरणीय परंपरा

गायत्री परिवार बैतूल के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री रविशंकर पारखे जी ने अपनी माता श्रीमती सयाबाई पारखे जी के स्वर्गवास के उपरांत एक अनुकरणीय पहल की। उन्होंने मृत्युभोज न करके श्रद्धांजलि सभा में पर्यावरण, गौसेवा व जनकल्याण के लिए समर्पित कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर उन्होंने 108 लक्ष्मी तरु एवं अशोक के पौधे, परमपूज्य गुरुदेव द्वारा रचित साहित्य, गौ उत्पादों से बने स्वस्तिक, ओम व दीपक इत्यादि भेंट किए तथा गौ-सेवा हेतु अनुदान दिया।

इस कार्यक्रम में केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री डी.डी. उइके जी की धर्मपत्नी श्रीमती ममता उइके, घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगाबाई सज्जन सिंह उइके, गायत्री परिवार जिला समन्वयक डॉ. कैलाश वर्मा, भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर पवार सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे। सभी ने इसे पर्यावरण संरक्षण एवं गौ संरक्षण की दिशा में एक प्रेरक कदम बताया।

डिवाइन वर्कशॉप

200 बच्चों को नशामुक्ति के संकल्प दिलाए

कोरबा। छत्तीसगढ़ : दिया, छत्तीसगढ़ की कोरबा शाखा ने दिनांक 21 नवम्बर को कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, साडा कोरबा में आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के अंतर्गत डिवाइन वर्कशॉप कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर कार्यक्रम विस्तारक कन्हैया चौहान ने युवाओं को जीवन का नाश करने वाले नशे से दूर रह कर राष्ट्र के नव निर्माण में अपना योगदान देने की प्रेरणा दी।

कार्यशाला में 200 से अधिक बच्चों ने नशामुक्ति का संकल्प लिया। इन आयोजनों में 'दिया' के जिला संयोजक विजेन्द्र यादव, कार्यक्रम विस्तारक टीम सदस्य सविता साहू, खिलावन पटेल, जितेन्द्र केवल, तानसेन गुप्ता, वरुण गुप्ता, महावीर केवल, ऋचा स्वर्णकार, रोहित बरेठ, रमाकांत साहू आदि युवा कार्यकत्ताओं का विशेष योगदान प्राप्त हो रहा है।

नई पहल : पाँच दिवसीय अंतः ऊर्जा जागरण शिविर

बैंडेल। पश्चिमी बंगाल : गायत्री आश्रम, बैंडेल के सुरम्य प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक वातावरण में 5 से 9 नवम्बर तक पाँच दिवसीय अंतःऊर्जा जागरण शिविर का आयोजन किया गया। हावड़ा, कोलकाता, उत्तर व दक्षिण चौबीस परगना, हुगली, मालदाह तथा धनबाद के सैकड़ों परिजन इस शिविर में शामिल हुए।

गायत्री के तत्त्वदर्शन पर आधारित उद्बोधन, गुरुदेव की वाणी में तरह-तरह की ध्यान साधनाएँ, आसन, प्राणायाम के अभ्यास ने शिविरार्थियों को ऊर्जावान एवं आनन्दित बनाए रखा। शिविर में भक्ति रस की मधुर धारा भी बही। प्रसिद्ध भजन गायक अनूप जलोटा की शिष्या एवं सहयोगी गायिका अजन्ता सरकार ने भक्ति गीतों की सुन्दर प्रस्तुति दी। साधकों ने गौ सेवा का पुण्य लाभ भी अर्जित किया। शिविर में भाग लेने वाले सभी साधकों के लिए यह आत्मिक शक्ति के जागरण एवं ज्ञानवर्धन का अविस्मरणीय अनुभव रहा।

प्रथम शिविर के संयोजक-संचालकगण

110 विद्यालय

15 हजार से अधिक विद्यार्थियों को दिया संदेश

अल्मोड़ा। उत्तराखण्ड

गायत्री परिवार अल्मोड़ा ने विद्यार्थियों को नशे की आत्मघाती प्रवृत्ति से बचाने के लिए उल्लेखनीय और अभिनन्दनीय प्रयास किए हैं। श्री भीम सिंह अधिकारी ने बताया कि जिले के 110 विद्यालयों में नशामुक्ति अभियान चलाया गया। इन कार्यक्रमों से 15 हजार से अधिक छात्र-छात्राओं को नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी गई और संकल्प दिलाया गया।

श्री भीम सिंह अधिकारी ने कहा कि सुधरे हुए सुसंस्कारी व्यक्ति ही समाज सुधार के सशक्त प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं। आज दुनिया में ऐसे लोगों की आवश्यकता है, जो यह संकल्प करें कि उनके पूरे जीवन में एक भी व्यक्ति उनसे नशा करना नहीं सीखेगा।

श्री भीम सिंह अधिकारी द्वारा विद्यार्थियों को संबोधन

यहाँ हुए कार्यक्रम, साहित्य बाँटा

राजकीय मेडिकल कॉलेज, राजकीय महिला पॉलीटेक्निक, राजकीय नर्सिंग कॉलेज, मां अंबे नर्सिंग कॉलेज कर्नाटकखोला, राजकीय महाविद्यालय तल्ला सल्ट सहित 110 विद्यालयों में नशामुक्ति की पुस्तक और चरित्र निर्माण साहित्य वितरित किया। इस अभियान में जगजीवन खोलिया, राजेंद्र प्रसाद त्रिपाठी, हीरा सिंह बिष्ट, गोपाल सिंह बिष्ट, पूरन सिंह बोरा, अंबा दत्त सती, अर्जुन नेगी आदि की सक्रिय भागीदारी रही।

गाँधी उद्यान में आरंभ हुआ साप्ताहिक योगाभ्यास सत्र

रायपुर। छत्तीसगढ़

रायपुर स्थित गाँधी उद्यान में गायत्री परिवार के तुषार जी के मार्गदर्शन में युवा साथियों ने सामूहिक योगाभ्यास सत्र का आयोजन किया। उद्यान में नित्य भ्रमण करने आने वाले लगभग 40 युवाओं ने इसमें भाग लिया। प्रज्ञा योग, सूर्य नमस्कार एवं विविध योगासनों ने सभी अभ्यासियों को सकारात्मकता और उत्साह से भर दिया। हास्यासन ने सभी को विशेष ऊर्जा और आनंद की अनुभूति कराई।

योगाभ्यास के उपरांत आत्मीय परिचय एवं विचार-विमर्श का क्रम चला, जिसमें पाक्षिक प्रज्ञा अभियान एवं अखण्ड ज्योति पत्रिकाओं का वितरण किया गया। प्रत्येक रविवार को प्रातः 7 से 8 बजे तक यह कार्यक्रम आयोजित करने के प्रस्ताव को सभी अभ्यासियों ने अपनी सहमति प्रदान की।

योगाभ्यासियों में युगसाहित्य का वितरण

व्यसनमुक्ति व पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम

अमरावती। महाराष्ट्र

गणेश दास राठी हाई स्कूल, विद्या नगर मोर्शी रोड में व्यसनमुक्ति पर प्रेरक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता गायत्री परिवार अकोला के डॉ. सुरेश राठी जी ने इसे संबोधित करते हुए छात्रों को व्यसनमुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, गौपालन तथा जीवन मूल्यों से जुड़े विषयों पर प्रभावी मार्गदर्शन प्रदान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के मुख्य अध्यापक श्री भट्ट ने की।

छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना जगाने हेतु 200 पौधों की कलमें वितरित की गईं, जिसे विद्यालय परिसर एवं आसपास के क्षेत्रों में आरोपित किया गया। कार्यक्रम के समापन पर सौ. प्रमिला राठी जी ने समस्त अतिथियों, शिक्षकों एवं छात्रों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

प्रधानाध्यापक श्री भट्ट डॉ. राठी का सम्मान करते हुए

स्कूल की छत बनी बगिया, बच्चे करते हैं पौधारोपण

नीमकाथाना। राजस्थान

अखिल विश्व गायत्री परिवार चूरू उपजोन के अंतर्गत नीमकाथाना में स्थित फेयरी विंग्स स्कूल बच्चों के लिए एक शिक्षण संस्थान के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण की एक आदर्श पाठशाला भी है। वहाँ विद्यालय परिवार की प्रेरणा से हर विद्यार्थी के जन्मदिन पर पौधारोपण किया जाता है। स्वयं विद्यालय की प्रमुख राधा देवनानी विद्यार्थियों को उनके जन्मदिन पर स्कूल में पौधारोपण करने और बच्चों के द्वारा लगाए गए पौधों की देखभाल करने के लिए प्रेरित करती हैं। बच्चे स्कूल की छत पर पौधारोपण करते हैं। इसका प्रभाव यह हुआ कि स्कूल की छत बगिया की तरह हरियाली से भर उठी है।

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता/नवीनीकरण के लिए बैंक खाता विवरण : SHRI VEDMATA GAYATRI TRUST (TMD) SBI AC : 306 3160 6578 (11 Digit) IFSC : SBIN0010588
इस बैंक अकाउंट में धनराशि जमा कराकर ट्रांस्फर प्रूफ और अपना पता पिनकोड व मोबाइल नंबर सहित व्हॉट्सएप : 9258369725 पर अथवा pragyaabhiyan@awgp.org पर भेज दें।

राष्ट्रव्यापी सक्रियता में झलकता शताब्दी वर्ष-2026 का उत्साह

नई पीढ़ी को भटकाव और तनाव से बचाने का संदेश दिया

जिला स्तरीय कन्या किशोर कौशल अभिवर्धन कार्यशाला

पांढुरना, छिंदवाड़ा। मध्य प्रदेश

24 नवंबर को गायत्री शक्तिपीठ पांढुरना में उपजोन छिंदवाड़ा की पाँचवीं जिला स्तरीय कन्या किशोर कौशल अभिवर्धन कार्यशाला संपन्न हुई। इसमें जिले भर से 132 प्रशिक्षक और 60 से अधिक पदाधिकारी सम्मिलित हुए।

लक्ष्य : भटकाव से बचाव

कार्यशाला का केन्द्र बिन्दु वर्तमान सामाजिक परिवेश में युवाओं के समक्ष बढ़ रही चुनौतियों, विशेषकर दिग्भ्रमित छात्रों द्वारा सोशल मीडिया में अत्यधिक समय व्यतीत करने से लक्ष्य से भटकाव और बढ़ता तनाव था। वरिष्ठ प्रशिक्षक श्री नरेंद्र हिंगवे ने अपने संबोधन में कहा कि इन दुर्गुणों से बचने का एकमात्र उपाय यह है कि सामाजिक और आध्यात्मिक संस्थाएँ बच्चों के बीच जाकर उन्हें अच्छे-बुरे का परिचय कराएँ और उन्हें जागरूक करें। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए पढ़े-लिखे युवाओं को इस पुनीत क्रम से जोड़ने का प्रयास कर रहा है।

मार्गदर्शक मण्डल : कार्यशाला की अध्यक्षता श्री गजानन मस्तकार ने की। मुख्य अतिथियों में श्री दिनेश देशमुख (उपजोन समन्वयक, छिंदवाड़ा) और श्री किशोर किनकर (उपजोन कार्यवाहक, कन्या किशोर कौशल अभिवर्धन कार्यक्रम) शामिल थे। श्री विश्वेश्वर गांजरे (जिला समन्वयक, पांढुरना) की विशेष उपस्थिति रही।

आँवलखेड़ा में 108 युवाओं की युवा वाहिनी का गठन

जन्मशताब्दी के अवसर पर हर व्यक्ति तक युग संदेश पहुँचाने की तैयारी

आँवलखेड़ा, आगरा। उत्तर प्रदेश

जन्मभूमि आँवलखेड़ा क्षेत्र में इस वर्ष अपनाई गई विशेष सक्रियता के प्रभाव से युवाशक्ति में अभूतपूर्व नवजागरण हुआ है। गायत्री शक्तिपीठ, आँवलखेड़ा के व्यवस्थापक श्री जीतेन्द्र द्विवेदी के मार्गदर्शन में इन दिनों जनजागरण की अत्यंत प्रभावशाली गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं। युग निर्माण आन्दोलन के लिए अपना जीवन समर्पित कर देने वाले दम्पति, सलुंबर, जिला उदयपुर (राजस्थान) के निवासी श्री हेमंत भट्ट एवं वनीता भट्ट द्वारा विगत कई माह से गाँव-गाँव प्रज्ञा पुराण कथा, बाल संस्कार शाला एवं विविध रचनात्मक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इन्हीं दिनों आगरा जिले में 11000 लोगों तक वर्षभर प्रज्ञा अभियान पहुँचाने का संकल्प उभरा है।

इन गतिविधियों ने जन्मभूमि क्षेत्र में युवाओं में सक्रियता का जबरदस्त उत्साह जगाया है। इनके माध्यम से जन्मभूमि क्षेत्र के हर गाँव, हर घर तक अपनी ही माटी के लाल, युगावतार परम पूज्य गुरुदेव का संदेश पहुँचाने की योजना बनाई गई है। योजना के क्रियान्वयन के लिए 108 जाग्रत् युवाओं की वाहिनी तैयार की जा रही है।

गायत्री शक्तिपीठ आँवलखेड़ा में जोन समन्वयक श्री जे.एस. कुशवाहा के नेतृत्व में इस हेतु विशेष गोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें 54 प्राणवान युवाओं को टी-शर्ट व कैप प्रदान कर उन्हें औपचारिक रूप से युवा वाहिनी से जोड़ा गया। जल्दी ही 54 बालिकाओं को भी इस क्रम में जोड़ कर कुल 108 युवाओं का प्रेरक समूह बनाया जाएगा।

देव परिवार निर्माण के लिए प्रशिक्षण दिया, जिम्मेदारी सौंपी

नारी उत्कर्ष सम्मेलन

सहारनपुर। उत्तर प्रदेश

युवा प्रकोष्ठ सहारनपुर ने परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी के कार्यक्रमों के अंतर्गत भव्य नारी उत्कर्ष समारोह का आयोजन किया। शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी बहिनों ने इसका संचालन करते हुए युग निर्माण आन्दोलन के प्रति आस्थावान बहिनों को युग चेतना विस्तार और देव परिवारों के निर्माण का प्रशिक्षण दिया।

नारी उत्कर्ष सम्मेलन को संबोधित करती शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली

इस कार्यक्रम में 500 से अधिक माताओं, बहिनों, भाइयों और स्कूली छात्र-छात्राओं ने भागीदारी की। परिवार निर्माण में महिलाओं की भूमिका, महिलाओं का गायत्री पर अधिकार जैसे विषयों पर युग संदेश दिया गया। हर घर को देव परिवार बनाने, घरों पर झंडा और मिशन की पट्टिका लगाने, बलिवैश्व यज्ञ और नियमित गायत्री उपासना, मंत्रलेखन साधना आरंभ करने जैसे अनेक विषयों संबंधी प्रेरणा और प्रशिक्षण दिया गया।

इस कार्यक्रम में भाग ले रही प्रत्येक बहिन से 24 नए परिवारों तक मिशन का संदेश पहुँचाने का आह्वान किया गया।

नजदीकी पुलिस स्टेशन की महिला अधिकारियों ने भी कार्यक्रम में भाग लेकर सरकार द्वारा निर्देशित नारी शक्ति मिशन के स्वरूप और उपयोगिता की जानकारी दी। उन्होंने साइबर क्राइम से सतर्क और सावधान रहने की महत्त्वपूर्ण सलाह भी दी।

गायत्री यज्ञ के साथ हुआ बी.एड. कॉलेज का शुभारंभ

मेरठ। उत्तर प्रदेश

आर.जी. डिग्री कॉलेज, मेरठ में बी.एड. का शुभारम्भ गायत्री महायज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ में कॉलेज की प्राध्यापिकाओं, शिक्षिकाओं एवं छात्राओं ने भाग लिया। गायत्री परिवार की बहिनों ने यज्ञ का संचालन किया। उन्होंने यज्ञ की व्याख्याओं के साथ जीवन प्रबंधन के व्यावहारिक सूत्रों की व्याख्या भी की और नित्य उपासना, साधना, आराधना करने के लिए प्रेरित किया।

गायत्री परिवार की बहिनों ने शिक्षिकाओं और विद्यार्थियों से राष्ट्र को समर्थ, सशक्त बनाने के लिए समाज तथा भावी पीढ़ी को संस्कारवान बनाने का आह्वान भी किया। इस परिप्रेक्ष्य में गायत्री परिवार के 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान की जानकारी दी गई। महिला मण्डल की रूपम मित्तल, मृदुला गोयल, कौशल शर्मा, प्रतिमा अग्रवाल सहित बहिनों ने कार्यक्रम में अपना विशिष्ट योगदान दिया।

यज्ञ करती शिक्षिका और छात्राएँ

नौसैनिकों की युग निर्माणी आस्था 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का शानदार आयोजन हुआ

विशाखापत्तनम। आंध्र प्रदेश : विशाखापत्तनम में 8 एवं 9 नवंबर 2025 को प्रज्ञा मंडल नौसेना बाग के अथक प्रयासों से आयोजित दो दिवसीय राष्ट्र जागरण 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ नौसैनिकों के बीच आध्यात्मिक ऊर्जा के संचार और राष्ट्रहित में सामूहिक संकल्प का एक अभूतपूर्व उदाहरण बना। सभी परिजनों ने नौसैनिकों के साथ-साथ अपने आपको एक उत्कृष्ट श्रेणी का युग सैनिक भी सिद्ध किया और मिशन के कार्य को डिफेंस क्षेत्र में और अधिक तत्परता से करने का संकल्प लिया।

इस यज्ञ में नौसेना प्रज्ञा मंडल के सदस्यों की कड़ी मेहनत के परिणामस्वरूप श्रद्धा और समर्पण का सैलाब उमड़ा। लगभग 3500 श्रद्धालुओं ने राष्ट्र हित में अपनी आहुतियाँ यज्ञ भगवान को समर्पित कीं। शान्तिकुञ्ज से श्री इंद्रजीत सिंह जी, श्री विष्णु कुमार शर्मा, श्री शक्ति सिंह एवं जनक जी की टोली यज्ञ संचालन के लिए पहुँची थी।

टोली ने शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में अपनाई जाने वाली सक्रियता के लिए विशिष्ट प्रेरणाएँ प्रदान कीं। परिणाम स्वरूप परिजनों में हरिद्वार में बसंत पर्व पर हो रहे शताब्दी समारोह में समयदान हेतु भी संकल्प उभरे।

यज्ञ संचालन करती शान्तिकुञ्ज की टोली

मुख्य सहयोगी : इस सफल आयोजन में श्री भूपेंद्र प्रसाद यादव जी, श्री संजय गुप्ता जी, श्री एस पी सिंह जी, श्री अनिल कुमार जी, श्री उमाशंकर यादव जी तथा श्री अरुण कुमार जी की मुख्य भूमिका रही।

आकर्षक थी ओडिशा टोली की अद्भुत कलाकृति

ओडिशा से पधारी श्री रवींद्र कुमार गौड़ा की टोली ने कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाने में अविस्मरणीय योगदान दिया। टोली के द्वारा बनाई गई अद्भुत रंगोली और 'सजल श्रद्धा एवं प्रखर प्रज्ञा' की कलाकृति सभी के लिए श्रद्धा और आकर्षण का केन्द्र बनी।

बस में सत्साहित्य वितरण, यात्रियों ने किया स्वागत

कोटा। राजस्थान

विचार क्रान्ति के लिए समर्पित नव चेतना केंद्र एवं युग निर्माण पुस्तकालय, थेकड़ा रोड, बोरखेड़ा, कोटा के संचालक श्री आर.सी. गुप्ता विजयवर्गीय ने कोटा से बारां जाते समय अपनी बस में सभी यात्रियों में प्रज्ञा अभियान एवं अखण्ड ज्योति की प्रतियाँ निःशुल्क वितरित कीं। उन्होंने यात्रियों को गुरुदेव के सुविचारों, जीवन-दर्शन एवं युग निर्माण आंदोलन के उद्देश्यों से अवगत कराया। उनके कार्य एवं विचारों ने यात्रियों को बहुत प्रभावित किया। यात्रियों ने इस पहल का स्वागत करते हुए कहा कि ऐसी छोटी-छोटी पहल समाज में बड़े परिवर्तन का आधार बनती हैं।

एक प्रेरक प्रयोग

55 दिवसीय अखण्ड साधना का सफल समापन

स्याना, बुलंदशहर। उत्तर प्रदेश

स्याना नगर में 55 दिनों तक प्रतिदिन नए-नए परिजनों के घरों में अखण्ड ज्योति की स्थापना कर 24-24 घंटे की जप साधना का विशेष साधना क्रम सम्पन्न हुआ। यह साधना क्रम 7 सितम्बर 2025 को आरंभ हुआ था, 31 अक्टूबर 2025 को 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ इसका सफल समापन हुआ। यज्ञ में लगभग 600 नए परिजनों ने श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ प्रदान कीं। 55 से अधिक नए परिजनों ने शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार आकर गुरु दीक्षा लेने का संकल्प लिया। युगतीर्थ की अभिनव प्रेरणाओं के साथ यज्ञ संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से श्री इंद्रजीत सिंह जी के नेतृत्व में टोली पहुँची थी।

बरहाना गाँव में भव्य दीपयज्ञ

7 नवंबर की सायं स्याना नगर से 15 कि.मी. दूर बरहाना गाँव में भव्य दीपयज्ञ का आयोजन रखा गया था। इस दीपयज्ञ में 50 से 60 नए परिजनों सहित 200 से अधिक व्यक्तियों ने आहुतियाँ प्रदान कीं।

इन कार्यक्रमों की सफलता में सर्वश्री संजय त्यागी, राजेंद्र त्यागी, मनीष त्यागी, योगाचार्य अनिल गोयल एवं श्री बाबू प्रजापति इत्यादि की मुख्य भूमिका रही।

विद्यालयों में संदेश, उल्लेखनीय सफलता

शान्तिकुञ्ज की टोली ने अलिंगुआ पब्लिक स्कूल किसोला तथा गणेश स्मारक इंटर कॉलेज नरसेना में पहुँचकर विद्यार्थियों के बीच संदेश दिया। टोली ने बच्चों को गायत्री मंत्र जप, प्राणायाम और समय के महत्त्व की जानकारी दी। विद्यार्थियों से 18 सूत्रीय युग निर्माण सत्संकल्प दोहराये गए। इन प्रेरणाओं का ही सत्परिणाम था कि दोनों विद्यालयों के 2240 विद्यार्थियों ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भाग लेने का संकल्प लिया।

2240 युवाओं ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भाग लिया

ज्ञान वह है जो अंतःकरण को शुद्ध करे, गुण, कर्म, स्वभाव का परिष्कार करे।

यज्ञों से जनजीवन में बढ़ती युग निर्माणी आस्था

जीवन की विविध समस्याओं का समाधान कर रहे हैं युगऋषि के विचार

मेरठ में आयोजित प्रज्ञा पुराण कथा एवं गायत्री महायज्ञ में भाग लेते श्रद्धालु

धौलाना में प्रतिभाओं का सम्मान

मेरठ। उत्तर प्रदेश

माँ गायत्री चेतना केन्द्र, रोहटा बाईपास, मेरठ के द्वारा बनवारी वाटिका में 9 से 15 नवम्बर तक सप्त दिवसीय प्रज्ञा पुराण कथा एवं पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। कथा व्यास परिव्राजक श्री ओ.पी. शर्मा जी ने अवतार परंपरा के अंतर्गत नवयुग के प्रज्ञावतार की लीलाओं से श्रोताओं को अवगत कराया। उन्होंने उपासना, साधना और आराधना को आध्यात्मिक जीवन की त्रिवेणी तथा आत्मिक प्रगति का मूल आधार बताया।

सक्षम मित्तल जी ने आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी विषय की जानकारी दी और गर्भवती माताओं को आध्यात्मिक साहित्य के अध्ययन की प्रेरणा दी। कार्यक्रम स्थल पर पूज्य गुरुदेव के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी एवं विशाल पुस्तक स्टॉल लगाया गया था। ओंकार सहारन, सक्षम मित्तल, रूपम, मृदुला गोयल, कौशल, प्रतिभा, रानी सहित अनेक परिजनों का आयोजन की व्यवस्था एवं संचालन में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

पावन प्रज्ञा पुराण कथाएँ

धौलाना, शौलाना, हापुड़। उत्तर प्रदेश

गायत्री तीर्थ प्रज्ञाकुंज शौलाना के तत्त्वावधान में 12 से 16 नवम्बर तक पाँच दिवसीय 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं पावन प्रज्ञा पुराण कथा का भव्य आयोजन हुआ। पाँच दिवसीय आयोजन में हजारों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित हुए। प्रथम दिन जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रेखा नायर ने भी उपस्थित होकर इस आयोजन को सराहा। उन्होंने इस आयोजन को सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक जागरण का प्रतीक बताया।

प्रथम दिन भव्य कलश यात्रा निकाली गई। सैकड़ों की संख्या में बहिनें पीले वस्त्र पहन कर एवं शीश पर दिव्य कलश धारण कर यात्रा में शामिल हुईं। नगर की गलियाँ गायत्री मंत्र, प्रेरक सुमधुर प्रज्ञा गीतों एवं क्रांतिकारी जयघोषों से गूँज उठीं।

यह कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री सूरत सिंह अमृते, सोमार साहू की टोली ने सम्पन्न कराया। प्रतिदिन सायंकाल श्रीमद् पावन प्रज्ञा पुराण कथा के माध्यम से युगऋषि के अमृततुल्य विचारों की गंगा प्रवाहित होती रही। श्री अमृते जी ने 'पारिवारिक जीवन में स्वर्ग का अवतरण' विषय पर बच्चों में देवत्व के जागरण, पारिवारिक सौहार्द्र एवं जीवन साधना के सूत्रों को अत्यंत सरल शब्दों में समझाया।

पाँच दिवसीय आयोजन में युग साहित्य की प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, ध्यान सत्र, भजन संध्या, दीपयज्ञ इत्यादि प्रमुख आकर्षण रहे। कार्यक्रम की सफलता में सुशील शर्मा, नीरज शर्मा, गंगाराम भगत जी, बलवीर सिंह, विमला बहन, मिथिलेश सहित बड़ी संख्या में परिजनों का सहयोग प्राप्त हुआ।

अंतरराष्ट्रीय पुस्तक महोत्सव में प्रज्ञा साहित्य का भव्य स्टॉल

अहमदाबाद। गुजरात

अहमदाबाद में 13 से 23 नवम्बर तक अंतरराष्ट्रीय पुस्तक महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ। गायत्री परिवार अहमदाबाद द्वारा इस पुस्तक महोत्सव में पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित पुस्तकों का विशाल साहित्य स्टॉल लगाया गया। गायत्री परिवार के स्टॉल में गुजरात के मुख्यमंत्री माननीय श्री भूपेन्द्र भाई पटेल, केन्द्रीय मंत्री माननीय श्री धर्मेन्द्र प्रधान, राज्य मंत्री श्रीमती रीवाबा जडेजा, अहमदाबाद नगर निगम की महापौर सहित अनेक गणमान्य पधारे। प्रज्ञा साहित्य एवं गायत्री मंत्र उत्तरीय प्रदान कर उनका अभिवादन किया गया और शान्तिकुञ्ज में हो रहे शताब्दी कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। अंतिम दिन माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह पधारे, राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने? वाङ्मय भेंट कर उनका अभिनंदन किया गया।

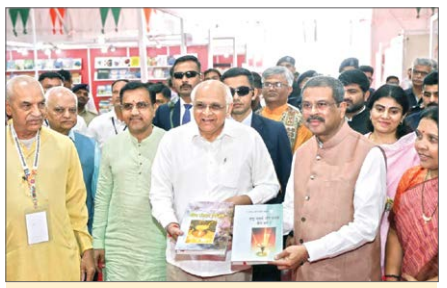

गायत्री परिवार के स्टॉल पर आए माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल एवं केन्द्रीय मंत्री माननीय श्री धर्मेन्द्र प्रधान को युग साहित्य भेंट करते गायत्री परिवार के परिजन

केन्द्रीय विद्यालय में प्रज्ञा साहित्य की स्थापना

भोपाल। मध्य प्रदेश

गायत्री नवचेतना विस्तार केन्द्र, नेहरू नगर के माध्यम से केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक एक में पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित वाङ्मय, पॉकेट बुक्स एवं जीवनोपयोगी साहित्य की स्थापना हेतु विद्यालय परिसर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। युग साहित्य स्थापना का उद्देश्य युवा पीढ़ी को जीवनोपयोगी एवं मूल्यपरक पुस्तकों से जोड़ कर उनमें चरित्र निर्माण एवं उच्च संस्कारों का जागरण था।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री गिरीश कुमार द्विवेदी, श्री प्रमोद श्रीवास्तव, शिक्षक एवं छात्र इस अवसर पर उपस्थित थे। प्रधानाचार्य जी ने कहा कि इस प्रकार का साहित्य विद्यार्थियों के जीवन को सकारात्मक और उद्देश्यपूर्ण दिशा प्रदान करता है तथा उन्हें मानवीय मूल्यों से परिचित कराता है।

प्रधानाचार्य जी को वाङ्मय भेंट करते परिजन

नवचेतना विस्तार केन्द्र के द्वारा इससे पहले 16 स्थानों पर प्रज्ञा साहित्य की स्थापना की जा चुकी है। इस कार्य में श्री प्रताप सिंह राणा, श्री हरिशंकर राय एवं अन्य गायत्री परिजनों की विशेष भूमिका रही।

गायत्रीमय हुआ अत्रिघाट चाय बगान

अत्रिघाट के श्रद्धालुओं में यज्ञ से छाये उत्साह की झाँकी

गुवाहाटी। असम

गायत्री चेतना केंद्र गुवाहाटी के सहयोग से 7 से 9 नवम्बर 2025 तक की तिथियों में अत्रिघाट में सम्पन्न 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ ने पूरे चाय बागान क्षेत्र को युगशक्ति गायत्री के दिव्य प्रवाह से सराबोर कर दिया। इस महायज्ञ में लगभग 25 चाय बागानों के आदिवासियों, श्रमिकों, स्थानीय निवासियों, बोडो, राभा, कछारी आदि जनजातियों तथा आसपास के 100 से अधिक गाँवों के श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। ढेकीयाजुली, गुवाहाटी, रंगिया, टंगला, गोरेश्वर, ठाकुरियापारा, ताम्बुलपुर, बक्सा, उदालगुड़ी के साथ दूरस्थ क्षेत्रों–सिलीगुड़ी, दार्जिलिंग, अरुणाचल, मेघालय, सिक्किम से आए गायत्री परिवार के परिजनों की निष्ठा और सेवा भावना अतुलनीय रही।

चाय बागान प्रबंधन, विभिन्न संगठनों, प्रशासन एवं मीडिया के सहयोग ने कार्यक्रम को बहुआयामी सफलता प्रदान की।

25 चाय बागान,
100 से अधिक गाँवों की
जनजातियों ने भाग लिया

वर्षों की सेवा-साधना का सुफल

गायत्री परिवार द्वारा चाय बागान में काम करने वाले मजदूरों और आदिवासी जनजातियों के उत्थान के लिए वर्षों से अथक प्रयास किये जा रहे हैं। घर-घर उपासना, साधना, संस्कारों के क्रम के साथ नशामुक्ति और स्वावलम्बन प्रशिक्षण के लिए भी गायत्री परिवार ने उल्लेखनीय कार्य किया है। इन प्रयासों की सार्थकता अत्रिघाट में हुए यज्ञ में दिखाई दी। 108 कुण्डीय महायज्ञ ने पूरे क्षेत्र में ऊर्जा, एकता और सद्भाव का नवीन संचार किया।

इस महायज्ञ में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की विशेष प्रेरणादायी उपस्थिति रही। समाचार 1 दिसम्बर 2025 के अंक में पृष्ठ 7 पर प्रकाशित हुए हैं।

केन्द्रीय विद्यालय में प्रज्ञा साहित्य की स्थापना

बाराबंकी। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ के विचार क्रान्ति ज्ञानयज्ञ अभियान के अन्तर्गत 'शेरवुड कॉलेज ऑफ नर्सिंग, धरसनिया, बाराबंकी में युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित वाङ्मय के सम्पूर्ण 79 खण्डों की स्थापना की गई। यह साहित्य श्री मुकेश श्रीवास्तव एवं श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव ने अपने स्वर्गीय माता-पिता की पावन स्मृति में संस्थान के पुस्तकालय को भेंट किया है। इस अवसर पर उपस्थित सभी संकाय सदस्यों एवं छात्र-छात्राओं को अखण्ड ज्योति पत्रिका भी भेंट की गई। इस अवसर पर श्री वी.के. श्रीवास्तव एवं संस्थान के निदेशक (सामान्य प्रशासन) श्री सतीश कुमार श्रीवास्तव ने भी गुरुदेव के साहित्य के प्रति अपने विचार व्यक्त किये। संस्थान के प्रधानाचार्य डॉ. राज अमित सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

आबू धाबी में लोकप्रिय हुआ गायत्री यज्ञ

आबू धाबी। संयुक्त अरब अमीरात

आबू धाबी में पहुँचे 'दिया' राजस्थान के युवा प्रतिनिधि श्री हेमेन्द्र सिसोदिया को श्री विक्रम सिंह पंवार के गृह प्रवेश का कार्यक्रम सम्पन्न कराने का आमंत्रण मिला। उन्होंने गायत्री यज्ञ के साथ गृह प्रवेश संस्कार सम्पन्न कराया। सभी ने अत्यंत श्रद्धा के साथ गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र से आहुतियाँ समर्पित कीं। श्री पंवार जी का परिवार यज्ञ से इतना प्रभावित हुआ कि उन्होंने आयोजकों से हवन कुंड को वहीं छोड़ देने का आग्रह किया। उन्होंने भविष्य में आबू धाबी की धरती पर इस प्रकार के यज्ञ आयोजित करने का आमंत्रण दिया और शान्तिकुञ्ज आने की इच्छा व्यक्त की। यजमान परिवार को भेंट स्वरूप परमपूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी का चित्र, गंगाजल एवं प्रज्ञा साहित्य प्रदान किया गया।

आबू धाबी में श्री विक्रम सिंह पंवार जी के घर गृह प्रवेश संस्कार सम्पन्न कराते 'दिया' राजस्थान के कार्यकर्त्ता श्री हेमेन्द्र सिसोदिया

दिवंगत देवात्मा को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री किरण कुमार श्रीवास, जांजगीर चांपा। छत्तीसगढ़

ग्राम किरीट निवासी मिशन के अत्यंत कर्मठ, ऊर्जावान एवं अनन्यभाव से गुरुदेव-माताजी के प्रति समर्पित कार्यकर्त्ता श्री किरण कुमार श्रीवास का 20 नवम्बर 2025 को देहावसान हो गया। मिशन की सेवा के संस्कार उन्हें पारिवारिक विरासत में मिले। उन्होंने 35 वर्ष की आयु में जीवन की अंतिम श्वास ली।

आत्मविश्वास बढ़ाने वाला प्रोत्साहन किसी को भी दिया जाने वाला सर्वोत्तम उपहार है। - परम पूज्य गुरुदेव

शताब्दी वर्ष के सौभाग्य की याद दिलाई, विशिष्ट सक्रियता की उमंग जगाई

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उत्तर प्रदेश के अनेक कार्यक्रमों में पहुँचकर गहन आत्मीयता की अनुभूति कराई

ज्योति कलश यात्रा के समापन पर कार्यकर्त्ता संगोष्ठी

बुलंदशहर। उत्तर प्रदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 27 से 30 नवम्बर 2025 तक उत्तर प्रदेश के प्रवास पर थे। उन्होंने कई जिलों में आयोजित कार्यक्रमों में पहुँच कर युग संदेश दिया। प्रवास का शुभारंभ बुलंदशहर से हुआ। वे गृहे-गृहे यज्ञ एवं ज्योति कलश यात्रा के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर आयोजित कार्यकर्त्ता संगोष्ठी को संबोधित करने बुलंदशहर पहुँचे थे। अश्वमेध यज्ञ जैसे विराट आयोजनों के साथ युग चेतना विस्तार में अग्रणी भूमिका निभा चुके बुलंदशहर के कार्यकर्त्ताओं ने अत्यंत आत्मीयतापूर्ण स्वागत किया। गायत्री शक्तिपीठ में दर्शन-पूजन के उपरांत कार्यकर्त्ताओं को संबोधित किया।

> सदैव चिंतन करें, हम क्या थे और गुरुदेव से जुड़ने के बाद क्या हो गये। यह चिंतन हमें सदैव कर्त्तव्य पथ का बोध कराता रहेगा।
> – डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अनेक मार्मिक प्रसंगों का स्मरण कराते हुए नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं को परम पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी के अंग-अवयव होने का स्मरण कराया। आदरणीय डॉ. साहब ने यह भी कहा कि प्रत्येक कार्यकर्त्ता को अपने भीतर झाँककर यह देखना चाहिए कि हम पहले क्या थे और पूज्य गुरुदेव से जुड़ने के पश्चात् क्या बन गए। यह चिंतन हमें सतत अपने कर्म पथ की ओर प्रेरित करता रहेगा और उज्ज्वल भविष्य की ओर प्रशस्त करता रहेगा।

डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि जन्मशताब्दी वर्ष हम सभी के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हम गुरुदेव के युग निर्माण के संकल्प से जुड़े हैं। इस संकल्प को पूरा करने के लिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक गुरुदेव-माताजी की चेतना को पहुँचा देना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है।

साहित्य विस्तार पटल का लोकार्पण

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 29 नवम्बर को गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर में नवीनीकृत साहित्य विस्तार पटल का लोकार्पण किया। उन्होंने कक्ष में विविध विषयों पर प्रदर्शित साहित्य वीथिका का अवलोकन किया। इस अवसर पर मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री उमानन्द शर्मा सहित गायत्री ज्ञान मंदिर के साथ मिलकर कार्य कर रहे ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

> ज्ञान जीवन का प्रकाश है। सद्ज्ञान की प्राप्ति से जीवन के सारे अभाव दूर हो जाते हैं।
> – डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

डॉ. चिन्मय जी ने उपस्थित सभी कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ और समर्पण भाव की सराहना करते हुए कहा कि ज्ञान जीवन का प्रकाश है, जीवन मूल्यों की सुरभि है। सद्ज्ञान की प्राप्ति से जीवन के सारे अभाव दूर हो जाते हैं। उन्होंने सभी कार्यकर्त्ताओं को जन्मशताब्दी वर्ष में सक्रियता के लिए मार्गदर्शन दिया और जन्मशताब्दी समारोह में भागीदारी का आमंत्रण दिया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी साहित्य विस्तार पटल का निरीक्षण करते हुए

विशाल महायज्ञों में जीवन को आलोकित करने वाली प्रेरणाएँ

बाराबंकी में 251 कुण्डीय यज्ञ में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधन

डॉ. चिन्मय जी का बस्ती में स्वागत

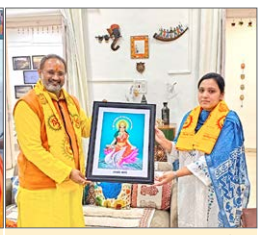

बस्ती की जिलाधिकारी से भेंट

बाराबंकी में 251 कुण्डीय यज्ञ में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधन

बाराबंकी : 251 कुण्डीय यज्ञ

दीपक आत्मविकास की प्रेरणा है, लोकमंगल की ओर कदम बढ़ाने का संकल्प है।
-आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

बाराबंकी में 251 कुण्डीय महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इसमें दीपयज्ञ के पावन अवसर पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने समस्त श्रोताओं के हृदयों को आह्लादित कर दिया। अपने उद्बोधन से उन्होंने युगधर्म, समष्टिगत चेतना के परिष्कार, नैतिकता के जागरण से समाज में सकारात्मक परिवर्तन जैसे अनेक विषयों पर उपस्थित हजारों श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। दीपयज्ञ के संदर्भ में उन्होंने कहा कि दीपक केवल ज्योति का प्रतीक नहीं, बल्कि भीतर की अंधकारमय प्रवृत्तियों को हटाकर आत्मविश्वास बढ़ाते हुए आत्मविकास एवं लोकमंगल की ओर कदम बढ़ाने का संकल्प है।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय मंत्री श्री स्वतंत्र देव सिंह जी, अनेक विशिष्ट मंत्रीगण, डीएम तथा एसडीएम एवं पुलिस प्रशासन के गणमान्य अधिकारी उपस्थित थे।

- आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अपने उद्बोधन से पूर्व संपूर्ण कार्यक्रम प्रांगण का भ्रमण करते हुए साहित्य स्टाल, भोजनालय आदि सेवाओं में संलग्न कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन किया।
- कार्यक्रम के पश्चात् डॉ. पण्ड्या जी डीएम आवास पर गए। जिलाधिकारी श्री शशांक त्रिपाठी जी और उनकी धर्मपत्नी शैलजा त्रिपाठी जी से भेंट कर उन्हें हरिद्वार में आयोजित हो रहे शताब्दी समारोह में आमंत्रित किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने बाराबंकी जनपद के समीप स्थित प्राचीन एवं दिव्य लोधेश्वर महादेव मंदिर में पहुँचकर दर्शन एवं रुद्राभिषेक संपन्न किया। उनके आगमन से स्थानीय कार्यकर्त्ताओं में नई ऊर्जा का संचार हुआ।

बस्ती : 151 कुण्डीय यज्ञ

जीवन के उत्थान के लिए अच्छे विचारों से जुड़िये।
-आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

29 नवम्बर को आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी बस्ती में आयोजित 151 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में पहुँचे। उन्होंने दीपयज्ञ के अवसर पर श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए युगावतार परम पूज्य गुरुदेव की दिव्य चेतना से जुड़कर जीवन का श्रेष्ठतम उपयोग करने की प्रेरणाएँ दीं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि मानव जीवन परमात्मा का दिया सर्वोत्तम उपहार है, क्योंकि केवल मानव जीवन में ही अपने भीतर की दिव्यता को पहचानने और दूसरों के जीवन में प्रकाश फैलाने की सामर्थ्य विद्यमान है। उन्होंने कहा कि भगवान ने हमें केवल जीने के लिए नहीं, बल्कि महान बनने और इस धरती को और सुंदर बनाने के लिए भेजा है।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि जीवन को ऊँचा उठाना है तो अच्छे विचारों से जुड़ें। सद्विचार देवत्व जगाते हैं, शुभ संकल्प असंभव को संभव बनाते हैं और संवेदनाएँ हमें ईश्वर के निकट पहुँचा देती हैं।

यह उद्बोधन श्रोताओं में गहन आध्यात्मिक प्रेरणा, उत्साह और नवचेतना का संचार करता रहा। यज्ञ स्थल पर फैली दिव्यता और साधना की ऊर्जा ने कार्यक्रम को और भी भव्य एवं मंगलमय बना दिया। श्रोताओं ने पूज्य गुरुदेव के विचारों को अपने जीवन में और गहराई से धारण करने का संकल्प दोहराया।

जिलाधिकारी से भेंट : आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी बस्ती की जिलाधिकारी सुश्री कृतिका ज्योत्सना जी, आईएएस से सौजन्य भेंट हेतु उनके निवास पर पहुँचे, उन्हें शताब्दी समारोह में भागीदारी का औपचारिक निमंत्रण दिया।

(शेष समाचार पृष्ठ 7 पर)

शक्तिपीठ में सप्तऋषियों की प्राण प्रतिष्ठा

बभनपुर, जौनपुर। उत्तर प्रदेश

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 28 नवम्बर को बभनपुर पहुँचे। उन्होंने

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी भगीरथ ऋषि की प्रतिमा में प्राण प्रतिष्ठा करते हुए

उत्तर प्रदेश सरकार में परिवहन राज्य मंत्री माननीय श्री दयाशंकर सिंह जी एवं सैकड़ों नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति में गायत्री मंदिर बभनपुर में सप्तऋषियों की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की। तत्पश्चात् उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए सनातन संस्कृति के ध्वजवाहक ऋषियों की पावन परम्परा का स्मरण कराया। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन और तप से उस परम्परा को पुनर्जीवित किया है। गायत्री परिवार देवात्मा हिमालय में तप कर रहे दिव्य ऋषियों की प्रेरणा एवं शक्ति अनुदानों से पूरे विश्व में सत्प्रेरणा और सृजनशीलता का विस्तार कर रहा है।

'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' का लोकार्पण एवं महाकाल मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा

बलरामपुर। उत्तर प्रदेश

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने बलरामपुर पहुँच कर गायत्री

गुरुस्मारकों में प्राण प्रतिष्ठा

शक्तिपीठ में 'प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा' का लोकार्पण किया एवं महाकाल मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा की। इस अवसर पर शक्तिपीठ परिसर में उत्साह, भक्ति और आध्यात्मिक ऊर्जा का अद्भुत संगम देखने को मिला।

तत्पश्चात आयोजित भव्य मंचीय कार्यक्रम में आदरणीय पण्ड्या जी ने श्रद्धालुओं एवं परिजनों को संबोधित करते हुए कहा कि युग निर्माण का आधार मनुष्य के भीतर की दिव्यता का जागरण है। जब हम स्वयं बदलते हैं, तब समाज का रूपांतरण स्वतः संभव होता है।

हँसते-हँसाते रहना और हल्की-फुल्की जिंदगी जीना जीवन की सबसे बड़ी कलाकारिता है।

धर्म, संस्कृति और शौर्य की विरासत को समृद्ध करती युग निर्माणी सत्प्रेरणाएँ

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का दो दिवसीय झारखंड प्रवास

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज के प्रमुख प्रतिनिधि, युवाओं के आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिनांक 22 और 23 नवम्बर में दो दिवसीय झारखंड प्रवास पर थे। उन्होंने देवभूमि देवघर, वीर वनवासी क्रान्तिकारियों की भूमि साहिबगंज तथा वनांचल गोड्डा में आयोजित विविध कार्यक्रमों में भाग लेते हुए जन-जन में नवचेतना जगाई, परम पूज्य गुरुदेव की युग निर्माण योजना से जुड़कर युग परिवर्तन के वर्तमान समय में अपने शौर्य, साहस की ऐतिहासिक विरासत को दोहराने का आह्वान किया। उनका यह प्रवास धार्मिक अनुष्ठानों, युवा प्रेरणा, आदिवासी संस्कृति के सम्मान और नारी शक्ति के जागरण पर केंद्रित रहा।

बाबा बैद्यनाथ धाम में शिवाभिषेक

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के प्रवास का शुभारंभ बाबा बैद्यनाथ की दिव्य नगरी देवघर से हुआ। गायत्री परिवार के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने एअरपोर्ट पर उनका अत्यंत उत्साह और श्रद्धा के साथ स्वागत किया। तत्पश्चात् वे बाबा बैद्यनाथ धाम पहुँचे, जहाँ प्रमुख पुरोहितों के सान्निध्य में शिवाभिषेक करते हुए विश्व कल्याण की प्रार्थना की। इस अवसर पर पुरोहित वर्ग ने उनका विशेष अभिनंदन किया। डॉ. चिन्मय जी ने पुरोहितों को देव स्थापना चित्र एवं युग निर्माण सत्संकल्प भेंट कर उन्हें सम्मानित किया।

युवा चेतना शिविर, साहिबगंज

आदिवासी संस्कृति का सम्मान, युवाओं को दिव्य संदेश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका अदा करने वाली साहिबगंज की पुण्य भूमि पर एक विशाल युवा चेतना शिविर का आयोजन हुआ। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी इस शिविर में दीपयज्ञ के अवसर पर पहुँचे। उनसे प्रेरणाएँ हृदयंगम करने के लिए दूर-सुदूर आदिवासी अंचलों से हजारों श्रद्धालु पहुँचे थे। श्रद्धा भावना से लबालब भरे हुए परिजनों ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का मंच पर भावभरा स्वागत किया।

युवा चेतना शिविर में लोक परंपरा से आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का हुआ स्वागत

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने नवयुग के कर्णधारों को ऋषियों के तप, त्याग, तेज की गौरवशाली गाथाओं का स्मरण कराते हुए उन दिव्य गुणों को अंतस् में धारण करने और युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव के सच्चे अनुयायी के रूप में मानवता की सेवा करने के लिए प्रेरित किया। अपने दिव्य संदेश में उन्होंने युवाओं से कहा कि हमें अपने दीपक आप बन कर स्वयं तप-त्याग एवं सादगीपूर्ण जीवन जीते हुए अपने चिंतन, चरित्र से समाज को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना है, अपने राष्ट्र को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए तत्पर होना है।

कर्मठ कार्यकर्ताओं का सम्मान

इस अवसर पर डॉ. चिन्मय जी ने दशकों से मिशन की सेवा में प्राण-प्रण से जुटे वरिष्ठ कार्यकर्ता भाई-बहिनों का विशेष सम्मान भी किया।

हूल क्रान्ति के नायक सिदो-कान्हू को भावभरी श्रद्धांजलि

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले महान क्रांतिकारी आदिवासी भाईयों सिदो मुर्मू और कान्हू मुर्मू के क्रांति स्थल, भोगनाडीह में पहुँचकर उन्हें भावभीनी पुष्पांजलि अर्पित की। उस वट वृक्ष के सान्निध्य में, जिस पर सिदो और कान्हू को गिरफ्तार कर अंग्रेजों ने 26 जुलाई 1855 को फाँसी दे दी थी, उनकी वीरता का बारंबार स्मरण कर उन्हें नमन किया। आज उस वटवृक्ष को 'क्रान्ति स्थल' के रूप में जाना जाता है।

उल्लेखनीय है कि सिदो मुर्मू, कान्हू मुर्मू एवं अन्य दो भाई चाँद और भैरव मुर्मू संथाल आदिवासी थे। उन्होंने 30 जून 1855 को अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूँका, जिसके प्रभाव से पूरे आदिवासी क्षेत्र संथाल में अंग्रेजों के विरुद्ध जबरदस्त विद्रोह खड़ा हो गया। उनके नेतृत्व में 'हूल क्रांति' की शुरूआत हुई थी।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस ऐतिहासिक क्रान्तिकारी भूमि के प्राणवान क्षेत्रीय परिजनों को युग निर्माण योजना एवं जन्मशताब्दी वर्ष 2026 का परिचय देते हुए उनमें नवयुग की क्रान्ति के लिए शुभ भावों का संचार किया। इस अवसर पर पूर्वी जोन समन्वयक शांतिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री घनश्याम देवांगन, डॉ. गोपाल शर्मा आदि शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

आद. डॉ. चिन्मय जी ने भोगनाडीह पहुँचकर हूल क्रान्ति के नायकों को दी श्रद्धांजलि

कन्या कौशल शिविर, गोड्डा : नारी जागरण का संदेश

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी गोड्डा में आयोजित विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए

प्रवास के अंतिम चरण में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने सुरम्य वनांचल प्रदेश गोड्डा में आयोजित कन्या कौशल शिविर में पहुँचकर मार्गदर्शन दिया। उन्होंने भारतीय संस्कृति की आदर्श नारियों के उदाहरणों के माध्यम से उपस्थित प्रतिभागियों को 'स्व' में निहित शक्ति को पहचानने एवं युगधर्म निभाने की प्रेरणा दी। उन्होंने युग परिवर्तन की वर्तमान वेला में बहिनों की महती भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि नारी धरती की तरह नवसृजन की आधार है। वह स्नेह, संवेदना, सहकार, सद्भावना जैसे गुणों की खान है। मातृशक्ति अपनी मौलिक गरिमा को पहचाने, अपने व्यक्तित्व को सहज गुणों से निखारे। जैसे उपजाऊ धरती में ही अच्छी फसल होती है, वैसे ही मौलिक गुणों से सम्पन्न देवियाँ ही सशक्त, समृद्ध राष्ट्र के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभायेंगी।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का उत्तर प्रदेश प्रवास (पृष्ठ 6 के पूरक समाचार)

सहजनवां : 108 कुण्डीय यज्ञ

सहजनवां, गोरखपुर। उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश प्रवास के अंतिम दिन अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी सहजनवां तहसील के प्राणपुर सिधौली ग्राम में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में पहुँचे। परिजन एवं स्थानीय श्रद्धालु आदरणीय पण्ड्या जी के आगमन से आनंदित और प्रेरित दिखाई दिए।

देव पूजनोपरांत डॉ. चिन्मय जी ने याजकों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि यज्ञ वह तप है जो मनुष्य को उत्कृष्टता, समाज को समरसता और संपूर्ण मानवता को दिव्यता की ओर अग्रसर करता है। सामूहिक साधना गुरुदेव की कृपा को बढ़ाती है और हमारे जीवन में प्रकाश भर देती है।

ग्राम की पावन भूमि, यज्ञ की दिव्य ऊर्जा और श्रद्धा से अभिसिंचित वातावरण ने पूरे आयोजन को आध्यात्मिक आनंद से परिपूर्ण कर दिया।

इसके उपरांत आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने संत कबीर नगर जनपद स्थित मगहर में संत कबीर के निर्वाण स्थल के दर्शन किए तथा कबीर पंथ के प्रमुख महंत विचारदास जी से सप्रेम भेंट की।

प्रसिद्ध तीर्थों एवं शक्तिपीठों का दर्शन-पूजन और आत्मीय स्वजनों पर स्नेहवर्षा

श्री काशी विश्वनाथ धाम में रुद्राभिषेक
वाराणसी। उत्तर प्रदेश

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी वाराणसी पहुँचे। एअरपोर्ट पर कार्यकर्त्ताओं द्वारा अत्यंत भावभरे स्वागत के उपरांत वे सर्वप्रथम श्री काशी विश्वनाथ धाम पहुँचे, बाबा विश्वनाथ के दिव्य स्वरूप का दर्शन एवं अभिषेक किया। महाकाल स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव के संकल्पों को पूरा करने के लिए जीवन का पल-पल समर्पित कर देने वाले शान्तिकुञ्ज के युवा प्रतिनिधि ने बाबा विश्वनाथ जी से समूची मानवता के उत्थान की प्रार्थना की।

बाबा के धाम में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि की उपस्थिति की दिव्यता की विशेष अनुभूतियाँ भी सभी को होती रहीं। इस अवसर पर एनडीआरएफ के डीआईजी श्री मनोज कुमार शर्मा जी की विशेष उपस्थिति रही।

प्रबुद्धजनों का मार्गदर्शन
सुलतानपुर। उत्तर प्रदेश

सुलतानपुर पहुँचने पर स्थानीय चिकित्सकों, समाजसेवियों एवं गायत्री परिवार के परिजनों के साथ भेंटवार्ता हुई। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उन सबका मार्गदर्शन करते हुए जीवन में आध्यात्मिकता को अपनाकर उत्कृष्टता को अपनाने तथा मानवीय मूल्यों को समाहित करने की प्रेरणाएँ दीं। संत मना डॉ. चिन्मय जी के विचार और व्यवहार ने सभी को बहुत प्रभावित किया।

सुलतानपुर में प्रबुद्ध जनों का सम्मान

आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी तत्पश्चात् गायत्री शक्तिपीठ, मुसाफिरखाना के दर्शन-पूजन हेतु पहुँचे। वहाँ उपस्थित गायत्री परिजनों ने अपने क्षेत्रीय प्रयासों एवं सेवाकार्यों का परिचय दिया। गुरुधाम से हुई स्नेहवर्षा से सभी अभिभूत हुए, जन्मशताब्दी में सक्रियता की उमंगें बुलंद हुईं।

गोण्डा। उत्तर प्रदेश

बाराबंकी के बाद आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी गायत्री शक्तिपीठ गोण्डा पहुँचे, शक्तिपीठ में निहित दिव्य चेतना का नमन-वंदन करते हुए गुरुस्मारकों पर श्रद्धासुमन अर्पित किये। स्थानीय परिजन माताएँ, युवा आदि उन्हें अपने बीच उपस्थित होकर माँ गायत्री की आरती उतारते देख कर भावविभोर हो गए, अत्यंत श्रद्धा, उत्साह से भर उठे।

शिवाभिषेक : डॉ. पण्ड्या जी समीपस्थ महाकाल मंदिर भी पहुँचे तथा वहाँ जलाभिषेक कर राष्ट्र एवं समाज उत्थान की प्रार्थना की।

शक्तिपीठ के दर्शन, परिजनों का उत्साहवर्धन
भानपुर, बस्ती। उत्तर प्रदेश

लाखों युवाओं के आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 29 नवम्बर को भानपुर स्थित पुनान कुनिया, गायत्री शक्तिपीठ में पहुँचे। परिजनों ने अत्यंत भावपूर्ण स्वागत किया। उनकी आत्मीयता और स्नेहासिक्त प्रेरणाओं से सैकड़ों परिजन, युवा जन्मशताब्दी वर्ष में विशेष सक्रियता के लिए प्रेरित और उत्साहित हुए।

अनजान होना उतनी लज्जा की बात नहीं, जितनी सीखने के लिए तैयार न होना है।

कर्मयोग की जीवंत प्रतिमा श्रद्धेया शैल जीजी के 73वें जन्मदिन पर

अंतस् के उल्लास की भावभरी अभिव्यक्तियाँ

स्नेहसलिला श्रद्धेया जीजी के जन्मदिवस पर विविध रूपों में श्रद्धा सुमन समर्पित करते परिजन

गुरुदेव-माताजी द्वारा युग परिवर्तन के महान कार्य को नेतृत्व प्रदान करने के लिए गढ़ी गई, गीता जयंती के दिन ही जन्मीं गीता की जीवंत प्रतिमा स्नेहसलिला श्रद्धेया शैल जीजी का 73वाँ जन्मदिवस गीता जयंती-1 दिसंबर 2025 के दिन बड़े आनन्द और उल्लास के साथ मनाया गया। श्रद्धेया जीजी ने अपना जन्मदिन मिशन की उदात्त परम्परा के अनुरूप दीपयज्ञ के साथ पूरी सादगी से मनाया। इस अवसर पर उन्हें शुभकामनाएँ देने पहुँचे शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के परिवारी जनों के साथ शिविरार्थी, श्रद्धालुओं का श्रद्धेया जीजी के प्रति आत्मीयता और प्रेम भाव उनके हँसते-खिलते चेहरों पर स्पष्ट झलकता रहा। ऐसा प्रतीत हुआ मानो एक कुशल माली के रूप में श्रद्धेया जीजी, श्रद्धेय डॉक्टर साहब द्वारा सींचे गए नंदनवन के खिलते-मँहकते पुष्प ही उनके प्रति अपनी कृतज्ञता की भावनाएँ अभिव्यक्त करने पहुँचे हों।

जन्मदिवस समारोह का शुभारंभ संस्कार प्रकोष्ठ के पुरोहितों द्वारा सम्पन्न कराए गए दीपयज्ञ के साथ हुआ। सर्वप्रथम आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी ने तिलक, माल्यार्पण एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर श्रद्धेया जीजी को अपनी शुभकामनाएँ दीं, आशीर्वाद लिये। तत्पश्चात् सभी परिजनों ने गीतों, कविताओं, श्रद्धेया जीजी के दुर्लभ चित्रों के रूप में और पुष्पगुच्छों के रूप में अपनी स्नेहाञ्जलि प्रदान की।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब की शुभकामनाएँ

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने श्रद्धेया जीजी को अपनी शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए मिशन के संचालन में उनकी कुशलता और समर्पण भाव का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि जीजी परम वंदनीया माताजी की तरह ही अपने तपोबल से करोड़ों लोगों के इस विराट देव परिवार को स्नेह-संरक्षण प्रदान करते हुए मत्स्यावतार की भाँति उसका निरंतर विस्तार कर रही हैं।

माँ भगवती भोजनालय, शान्तिकुञ्ज का विस्तार

डेढ़ करोड़ रुपये की मशीनें लगीं

मिशन के निरंतर हो रहे विस्तार को ध्यान में रखते हुए शान्तिकुञ्ज में चल रहे माँ भगवती भोजनालय की क्षमता कई गुना बढ़ा दी गई है। इसके लिए बड़े आकार के कई कुकर लगाए गए हैं। स्नेहसलिला श्रद्धेया शैल जीजी ने अपने जन्मदिवस-गीता जयंती के दिन भोजनालय में आई इन नई मशीनों का उद्घाटन किया। इस अवसर पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं आदरणीया शेफाली जीजी भी उनके साथ उपस्थित थे।

माँ भगवती भोजनालय के प्रभारी श्री जमना विश्वकर्मा जी ने बताया कि शान्तिकुञ्ज में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या निरंतर बढ़ रही है। इसके अतिरिक्त माँ अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत प्रतिदिन हरिद्वार के हजारों जरूरतमंदों तक निःशुल्क भोजन पहुँचाया जाता है। उत्तराखण्ड में होने वाली प्राकृतिक आपदाओं के समय भी शान्तिकुञ्ज जरूरतमंदों के लिए तत्काल भोजन भेजता रहा है। इन आवश्यकताओं को देखते हुए भोजनालय का विस्तार अत्यंत आवश्यक हो गया था। परिजनों ने इस आवश्यकता

को समझा और सदैव की भाँति अपनी उदारता का परिचय देते हुए लगभग डेढ़ करोड़ रुपये की मशीनें शान्तिकुञ्ज को प्रदान की हैं।

भोजनालय की विस्तार योजना के अंतर्गत 500 किलो, 400 किलो एवं 300 किलो क्षमता के 3-3 बड़े-बड़े कुकर लगाए गए हैं। इनमें मात्र कुछ ही मिनिटों में लगभग 2000 लोगों के लिए दाल, चावल, सब्जी, दलिया आदि तैयार किये जा सकते हैं। प्रतिदिन 50,000 लोगों के लिए भोजन तैयार करना इनसे संभव हो गया है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में रक्तदान शिविर

जन्मशताब्दी के उत्साह के साथ 325 युवाओं, विद्यार्थियों ने किया रक्तदान

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार में एनसीसी दिवस, दिनांक 24 नवंबर को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय और माँ गंगे ब्लड बैंक के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित इस शिविर में विश्वविद्यालय परिवार के 325 युवाओं एवं शान्तिकुञ्ज के साधकों ने रक्तदान करते हुए 'रक्तदान-जीवनदान' का संदेश दिया। आयोजकों ने बताया कि यह एक विशेष सेवायज्ञ है, जिसमें संकलित रक्त को जरूरतमंदों हेतु सुरक्षित रखा जायेगा।

अखण्ड दीप एवं परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी की मंगल वेला में माननीय प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की विशेष प्रेरणाओं से इस रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया था। उनकी प्रेरणाओं ने विद्यार्थियों में राष्ट्रहित एवं सामाजिक संवेदनाओं का संचार किया। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि ने इस रक्तदान शिविर को 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' के संकल्प की सिद्धि के महायज्ञ के समान बताया। एनसीसी अधिकारी एवं शिविर समन्वयक लेफ्टिनेंट डॉ. पवन कुमार राजोरिया व डॉ. उमाकांत इंदौलिया के नेतृत्व ने विद्यार्थियों को अनुशासन और सेवा-भाव हेतु प्रेरित किया।

गायत्री विद्यापीठ का वार्षिकोत्सव

खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने बच्चों की दक्षता, कला और अनुशासित व्यक्तित्व का परिचय दिया

17 एवं 18 नवंबर को गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के वार्षिकोत्सव एवं खेल दिवस का 17 नवम्बर, सोमवार को शुभारंभ हुआ। इसके अंतर्गत प्ले वे से लेकर 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने विभिन्न खेलों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते हुए गायत्री परिवार के उदात्त चिंतन, स्वानुशासन, उत्कृष्ट शिक्षण और अपने संस्कारित व्यक्तित्व का परिचय दिया। सभी विद्यार्थियों में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ।

उत्सव-2025 का शुभारंभ देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी तथा गायत्री विद्यापीठ की व्यवस्था मण्डल प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी ने दीप प्रज्वलन, ध्वजारोहण तथा करतल ध्वनियों के बीच बच्चों की शानदार मार्च पास्ट का निरीक्षण कर किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने बच्चों को पूरे मनोयोग के साथ खेल भावना का परिचय देने और अनुशासन के पालन की शपथ दिलाई। इस अवसर पर उन्होंने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि जीवन के सर्वांगीण विकास में खेलों का बड़ा महत्त्व है। खेल शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास में बहुत बड़ी सहायता करते हैं।

दोनों दिन अलग-अलग वर्गों के लिए अनेक तरह की खेल प्रतियोगिताएँ एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बच्चों के उत्साहपूर्ण अभिनय ने सभी को बहुत प्रभावित किया। कृष्ण-सुदामा मिलन, कालिया नाग वध, गोवर्धन लीला, रासलीला तथा

उद्घाटन समारोह में उपस्थित आदरणीय डॉ. चिन्मय जी एवं शेफाली जी

कंस वध जैसे प्रसंगों का मंचन अत्यंत हृदयस्पर्शी था। नारी अस्मिता का बोध कराने वाले द्रौपदी चीर हरण के दृष्य ने सभी को भावविभोर कर दिया। मंच संचालन स्तुति पण्ड्या, रिया सैनी, कृष्णा पटेल, अक्षित सैनी, कृष्णाराव देशमुख और श्रीमती आशा रावत ने सम्मिलित रूप से किया।

समापन समारोह में श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी के अलावा शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी भी उपस्थित थे। उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। प्रधानाचार्य श्री सीताराम सिन्हा सहित समस्त शिक्षकों ने अथक परिश्रम करते हुए बच्चों के व्यक्तित्व को निखारने में प्रशंसनीय योगदान दिया।

'दिया' ग्रेटर नोएडा द्वारा शारदा यूनिवर्सिटी में नवसृजन संकल्प समारोह का आयोजन हुआ

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी शारदा यूनिवर्सिटी में आयोजित सम्मेलन को संबोधित करते हुए

'दिया' ग्रेटर नोएडा ने प्रतिष्ठित शारदा यूनिवर्सिटी में 'नवसृजन संकल्प समारोह' का आयोजन किया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति, लाखों युवाओं के आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी समारोह के मुख्य वक्ता थे। उन्होंने गणमान्य श्रोताओं तक राष्ट्र जागरण की पुकार सुनाई।

अपने मार्मिक उद्बोधन में आदरणीय चिन्मय जी ने कहा, 'राष्ट्र का निर्माण व्यक्ति के निर्माण से होता है। हर व्यक्ति को यह निरंतर विचार करना चाहिए कि मैं क्या कर रहा हूँ और उसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने युवाओं को प्रेरित किया कि वे त्याग, समर्पण और सेवा की भावना के साथ दूसरों के लिए जीवन जियें, क्योंकि इसी से जीवन सार्थक और राष्ट्र सशक्त बनता है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय सेना के वरिष्ठ अधिकारी एवं ऑपरेशन खुकरी के प्रमुख कमांडरों में से एक मेजर जनरल राजपाल पुनिया जी उपस्थित हुए। उत्तर प्रदेश सरकार में होम गार्ड एवं नागरिक सुरक्षा विभाग के राज्यमंत्री माननीय धर्मवीर प्रजापति जी ने भी समारोह को संबोधित किया।

इस अवसर पर सभी अतिथियों को परमपूज्य गुरुदेव द्वारा रचित प्रज्ञा साहित्य प्रदान किया गया।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

प्रज्ञा अभियान संबंधित संपर्क सूत्र :
फोन : 01334-311004
9258369725 (व्हॉट्सएप)
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 12.12.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26